विचार बिन्दु

जिन्हें हम हीन या नीच बनाये रखते है वो भी क्रमशः हमे हेय और दीन बना देता हैं। –टैगोर

सोशल मीडिया: वैचारिक दृढ़ता बनाम असहिष्णुता

अब भारतीय समाज का बहुत बड़ा हिस्सा किसी न किसी सोशल मीडिया प्लेट्फॉर्म का प्रयोग करने लगा है। कम्प्यूटर का चलन बढ़ने, मोबाइल के स्मार्ट हो जाने और इण्टरनेट के सस्ता तथा अधिक सुलभ हो जाने से इस प्रयोग में बहुत तेज़ी से वृद्धि हुई है। बहुत सारे लोग हैं जो इसका प्रयोग अपने सामाजिक–पारिवारिक रिश्तों के निर्वाह के लिए करते हैं। वे अपने सुख–दुख की बातें करते हैं, अपने हर्ष और विषाद की ख़बरें साझा करते हैं और आवश्यकतानुसार अपनी खुशी और संवेदनाओं का आदान–प्रदान करते हैं। किसी को कुछ हासिल हुआ तो बधाई और किसी ने कुछ खोया तो संवेदनाएं। सोशल मीडिया की वजह से बधाइयों का आदान–प्रदान खूब होने लगा है। बिना किसी ख़ास प्रयत्न के हमें अपनों के जन्म दिन की सूचनाएं मिल जाती हैं और हम भी प्राय: बिना कोई प्रयास किए, किसी उपलब्ध टेम्पलैट का प्रयोग करके, या किसी इमोजी के माध्यम से अपनी शुभ कामनाएं दे देते हैं। यह सोशल मीडिया का सात्विक और निरापद उपयोग है।

इसका लगभग ऐसा ही उपयोग साहित्य और कलाओं की दुनिया के लोग भी करते हैं। वे अपनी नई किताब के प्रकाशन की सूचना देते हैं, अपने लेख, कविता आदि के छपने की या अपने कंसर्ट के आयोजन की ख़बर देते हैं। बहुत बार लोग अपनी रचनाशीलता की बानगी भी यहां दे देते हैं, मसलन कोई कवि अपनी कविता पोस्ट कर देता है या कोई गायक अथवा चित्रकार अपनी कला का एक अंश साझा कर देता है। अगर किसी को कोई पुरस्कार, सम्मान आदि मिलता है तो उसकी ख़बर हमें इस माध्यम से मिल जाती है और सम्बद्ध व्यक्ति तक हम भी अपनी बधाई पहुंचा देते हैं। यह माध्यम बहुत बार दुखद समाचार भी हम तक पहुंचाता है। किसी साहित्यकार, कलाकार के बीमार होने या उसके दिवंगत होने की ख़बर भी इसी माध्यम से हम तक पहुंचती है। यहीं यह बात उल्लेखनीय है कि मुद्रण व अन्य संचार माध्यम बहुत बार ऐसी ख़बरों की अनदेखी कर जाते हैं। तो यह भी सोशल मीडिया का एक सात्विक व निरापद उपयोग ही है। लगभग मैंने इसलिए कहा कि इसका उपयोग करते हुए बहुत सारे लोग आत्म प्रचार की अति कर जाते हैं, और बहुत बार प्रतिक्रिया स्वरूप उनको पसंद न करने वाले ऐसी टिप्पणियां भी कर जाते हैं जिनकी वजह से यह उपयोग सात्विक नहीं रह जाता है। लेकिन ऐसा अधिक नहीं होता है।

सोशल मीडिया का तीसरा उपयोग वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए होता है। मान लीजिए, किसी विषय पर –चाहे वह राजनीतिक हो, धार्मिक हो, सांस्कृतिक हो, सामाजिक हो या कोई और हो– आपके कुछ ख़ास विचार हैं। आप उन विचारों को सोशल मीडिया के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाते हैं। इधर मुद्रण माध्यमों और दृश्य माध्यमों की प्रकृति में आए बदलाव के कारण वहां वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए स्थान संकुचित हुआ है। ऐसे में सोशल मीडिया एक सशक्त विकल्प के रूप में सामने आया है। यहां न तो स्थान का अभाव है और न (लगभग) कोई सेंसर। आप जो चाहें और जैसे चाहें उस तरह अपनी बात कह सकते हैं। एक तरह से यह अभिव्यक्ति की आज़ादी की पराकाष्ठा है। अब, पराकाष्ठा के अपने ख़तरे भी होते हैं और वे ख़तरे यहां साफ़–साफ़ दिखाई भी देते हैं। बहुत बार लोग अपनी बात कहते हुए शालीनता की सीमाओं का खुला उल्लंघन कर बैठते हैं। वे इस बात को समझने से पूरी तरह इंकार करते हैं कि अपनी बात शालीनता से भी कही जा सकती है। जब ऐसा होता है तो स्वाभाविक ही है कि इसकी प्रतिक्रिया भी होती है, और बहुत बार प्रतिक्रिया भी उतनी ही या उससे भी ज़्यादा अशालीन होती है। तब संवाद विवाद में तब्दील हो जाता है। और ऐसा केवल अशालीन अभिव्यक्ति के मामले में ही नहीं होता है। बहुत बार यह भी होता है कि आप तो शालीनता से अपनी बात कहते हैं लेकिन जो उससे असहमत होते हैं वे अपनी प्रतिक्रिया में अशालीन हो जाते हैं। विशेष रूप से राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों पर चर्चा में इधर ऐसा ज़्यादा होने लगा है।

सोशल मीडिया की वजह से बधाइयों का आदान-प्रदान खूब होने लगा है। बिना किसी ख़ास प्रयत्न के हमें अपनों के जन्म दिन की सूचनाएं मिल जाती हैं और हम भी प्रायः बिना कोई प्रयास किए, किसी उपलब्ध टेम्पलैट का प्रयोग करके, या किसी इमोजी के माध्यम से अपनी शुभ कामनाएं दे देते हैं। यह सोशल मीडिया का सात्विक और निरापद उपयोग है।

हममें से बहुत सारे लोग इस बात को समझ पाने में असमर्थ हैं कि जितना हम अपने विचारों पर दृढ़ रहने को आज़ाद हैं उतना ही आज़ाद वह भी है जिसके विचार हमारे विचारों से भिन्न हैं। समझ का यही अभाव बहुत सारी समस्याओं के मूल में है। हम सारी दुनिया को एक रंग में, और वह रंग हमारी ही पसंद का हो, रंगा हुआ देखना चाहते हैं। यह जीवन में भी होने लगा है और सामाजिक मीडिया पर भी हो रहा है। कुछ लोग इसे वैचारिक ध्रुवीकरण का भी नाम देते हैं। मुझे यह ध्रुवीकरण से भी अधिक असहिष्णुता का मामला लगता है। हम अपने से भिन्न को स्वीकार करने और बने रहने देने को ही तैयार नहीं हैं। हम चाहते हैं कि सभी वैसा ही सोच रखें जैसा हमारा है। यह बात राजनीति, धर्म, वेशभूषा आदि सारे मामलों में होती जा रही है। यह कह पाना कठिन है कि समाज ऐसा होता जा रहा है इसलिए सोशल मीडिया भी ऐसा हो रहा है या सोशल मीडिया समाज को अपने सांचे में ढाल रहा है। लेकिन इतना निश्चित है कि ऐसा होना दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता रहा है। विविधता हमारी जीवन शैली का अभिन्न अंग रही है। शायर सरशार सैलानी ने क्या खूब कहा है: ''**चमन में इख़्तिलात-ए-रंग-ओ-बू (रंग और गंध का मेल-जोल) से बात बनती है/ हम ही हम हैं तो क्या हम हैं तुम ही तुम हो तो क्या तुम हो।**'' लेकिन इधर सारा ज़ोर आग्रह जैसे 'हम ही हम' पर हो रहा है। सोशल मीडिया पर तो जैसे घमासान होने लगा है। अगर किसी ने कुछ कह दिया तो उससे भिन्न सोच वाले उस पर बड़ी बेरहमी से टूट पड़ते हैं। बात तर्क और तथ्यों की नहीं की जाती है। अभद्र भाषा को हथियार बनाकर दूसरे पक्ष की आवाज़ को दबाया जाता है। बहुत थोड़े से लोग ऐसे भी हैं जो ईंट का जवाब पत्थर से देते हैं, अन्यथा अधिकांश लोग मैदान छोड़ कर हट जाते हैं और यही वे लोग चाहते भी हैं। ईंट का जवाब पत्थर से देना भी कोई अच्छी बात नहीं है। लेकिन ऐसा करने वालों के पास भी अपने तर्क होते हैं। पहला तर्क तो यही कि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया गया है। ऐसे में बहुत सारे लोग यह भी सलाह देते हैं कि सोशल मीडिया पर किसी तरह का नियंत्रण अवश्य होना चाहिए। लेकिन सवाल यह उठेगा कि नियंत्रण किसका हो? वैसे तो अभी भी थोड़ा बहुत नियंत्रण है। कुछ नियंत्रण स्वयं इन माध्यमों का है, जिसे लेकर बहुत सारी असहमतियां भी व्यक्त की जाती हैं। मसलन यह कि ये माध्यम किसी ख़ास पक्ष के समर्थन में या किसी ख़ास पक्ष के विरोध में अपने एल्गोरिद्म के माध्यम बहुत बड़ा खेल कर जाते हैं। इस बात के अनेक प्रमाण भी दिए गए हैं कि दुनिया के कई देशों में इन माध्यमों ने गम्भीर हस्तक्षेप किए हैं। और यही बात सरकारी नियंत्रण के लिए भी मानी जा सकती है। किसी सरकार से, और वर्तमान परिदृश्य में, यह कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वह प्रतिपक्ष की आवाज़ को दबाने के प्रयास नहीं करेगी? ऐसे में नियंत्रण की बात, चाहे वह माध्यमों के भीतर से होया देश विशेष की सरकार के द्वारा, युक्तिसंगत नहीं लगती।

मेरा सोच तो यह है कि सोशल मीडिया के ज़िम्मेदारी भरे प्रयोग के लिए हमें अपने नागरिकों की डिजिटल साक्षरता बढ़ाने पर ही बल देना होगा। इस बारे में स्वैच्छिक संगठन और शैक्षिक संस्थान बड़ी भूमिका निबाह सकते हैं। सोशल मीडिया को बरतने के मामले में अभी हमें बहुत कुछ सीखना है। अगर कोई सोशल मीडिया पर कुछ कह रहा है तो हमें यह सीखना होगा कि हम उससे किस सीमा तक और किस तरह असहमत हो सकते हैं। विचारणीय यह भी है कि हमें अपनी असहमति को कितना खींचना है। क्या केवल अपनी बात कहकर हट जाना है या इस ज़िद पर अड़े रहना है कि सामने वाला हमसे सहमत हो ही जाए! मैं तो बहुत बार यह भी सोचता हूं कि अगर मैं किसी से सहमत नहीं हूं तो यह बात उसकी वॉल पर जाकर कहने की बजाय क्यों न अलग से और विस्तार से अपनी वॉल पर कहूं! कोई सोशल मीडिया पर है इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करें। आचरण में एक मर्यादा का निर्वाह बहुत ज़रूरी है। यह बात सोशल मीडिया के बरतने वालों को समझाना बहुत ज़रूरी है। अभी काफी हद तक एक अराजकता का माहौल वहां बना हुआ है जिसकी वजह से यह बेहतर और सशक्त माध्यम न केवल अपनी सही भूमिका नहीं निबाह पा रहा है, यह हमारे देश की समरसता को और शांति व सौहार्द को भी नष्ट कर रहा है। इस ख़तरे को समझना और इसके प्रसार को रोकना हमारे समय की बहुत बड़ी ज़रूरत है और सभी समझदार लोगों को इस दिशा में न केवल सोचना, सक्रिय भी होना होगा।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

डॉक्टर स्वामीनाथन के द्वारा कृषि उत्पादन मूल्य की गणना के लिए सुझाया गया C2 फार्मूला/कोस्ट कितनी व्यवहारिक?

महावीर सिंह

राष्ट्रदूत में ''केंद्र सरकार फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा किन आधारों पर व कैसे करती है? कैसे सुधारों की आवश्यकता है?'' दिनांक 26 दिसम्बर 2024 को प्रकाशित लेख के उपरान्त कृषि व ग्रामीण पृष्ठ भूमि वाले कई पाठकों से C2 प्रतिशत कृषि लागत के सम्बंध में कई जानकारियां जाननी चाही। इसके क्रम में, सभी के लिए यह टिप्पणी है।

केंद्र सरकार की कॉम्प्रेहेंसिव स्टडी योजना के अन्तर्गत फील्ड सर्वेयर्स, रेंडमली चयनित प्लॉट्स से, कृषकों से सतत सम्पर्क रख कर कृषि लागत से सम्बंधित इनपुट्स, आवश्यक बाहरी श्रमिको, बुवाई जुताई से के लेकर फसल कटाई, निकलाई आदि पर मशीन, मानव श्रम व व्यय धन की जानकारी ली जाती है। इन्ही जानकारियों के आधार पर कृषि लागत मूल्य आयोग श्एइ की अनुशंसाएं करता है।

इन सूचनाओं के आधार पर कृषि लागत की A2 कोस्ट व पारिवारिक सदस्यों के श्रम का मूल्य FL निकाला जाता है। MSP की गणना के सम्बंध डॉक्टर स्वामीनाथन रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया है कि A2+FL में निम्न कोस्ट्स ओर जोड़ी जानी चाहिए::–

A2+FL में पारिवारिक सदस्यों के ऐसे श्रम का मूल्य निकाल कर जोड़ा जाना होता है, जिसकी गणना, सूचना फील्ड सर्वेयर्स नही लेते है। ऐसे श्रम के बारे में आगे चर्चा की जाएगी। इसके अतिरिक्त कृषि के लिए काम में ली जाने वाली स्थायी मशीनरी, औजार–उपकरण, गोदाम–मकानात, आदि के मूल्य पर ब्याज जोड़ने की बात की जाती है। इसमें खेती के लिए आवश्यक वर्किंग पूंजी पर ब्याज जोड़ने की बाता आती है। इसमें भूमि की रेंटल आय जोड़ी जानी चाहिए।

इन सब की व्यवहारिकता को यों समझ जा सकता है:–

1. कृषि के लिए, खेत तैयार करने से लेकर, इनपुट्स क्रय, बाहरी श्रमिकों को देने के लिए रोकड़, पैदा किया अन्न व चारा आदि उपयोगी बाईप्रोडक्ट्स घर लेकर आने व विक्रय तक विभिन्न कार्यों के लिए धन की आवश्यकता व समयावधि का अनुमान लगाना व उस पर ब्याज की गणना को A2+FL में शामिल करना व्यवहारिक रूप से किया जाना सम्भव है।

यहां यह समझना होगा कि खेत की बान व जुताई से लेकर अन्न निकालने तक लगी बाहरी श्रमिकों की व सीजन के कुछ समय पूरे दिन बाहरी श्रमिकों के साथ साथ काम करने वाले घर वालों की गणना आसान है। कॉम्प्रेहेंसिव स्टडी में लगें सर्वेयर्स के द्वारा यह आसानी से करली जाती है और पारिश्रमिक की गणना करना आसान है।

किन्तु फिल्ड सर्वेयरों द्वारा जिन कार्यों पर पूरे दिन घरेलू लोग काम करते और जिनके पारिश्रमिक की गणना कर ली जाती है उनके अतिरिक्त भी फसल के लिए खेत तैयार करने के लिए परिवार के छोटे–बड़े सदस्य कई प्रकार के ओर बहुत से कार्य करते है जैसे कि खेत की सफाई के लिए झाड़ आदि काटना, इक्कठा करना, बुवाई के वक्त खाद–बीज लेकर ट्रैक्टर के साथ रहना व काम में लगे लोगों के लिए चाय–पानी आदि व्यवस्था करना, ट्रैक्टर चलाने वाले को खेत सीमाएं बताते रहना, ट्रैक्टर बुवाई में कोई सुधार जरूरी हो तो बताना आदि कार्य करने पड़ते है। इसी प्रकार जब खेत की बुवाई पूरी जो जाती है तब आवार पशुओं से खेत की रक्षा करना, जब बीज अंकुरित होने लगता है तो मोर, तोते आदि पक्षियों से पौधों की रक्षा करनी होती है।

इसके पश्चात अनावश्यक खरपतवार, विड्स की जानकारी लेते रहना और उन को निकालते रहना होता है। पौधों को कोई किटाणु–विषाणकसान तो नहीं पहुंच रहे, पेस्टिसाइड्स की कब आवश्यकता होगी आदि जानकारियों सहित अनेक क्रियाएं किसान के पारिवारिक सदस्यों द्वारा की जाती हैं। अन्न खलिहान से घर ले जाना, चारा आदि को सुरक्षित करना, मंडी ले जाकर बेचने के लिए लेब जाना पड़ता है। स्वामीनाथन आयोग की सिफिरिस के अनुसार उपरोक्त समस्त छोटी, बड़ी क्रियाओं पर लगे समय का यथासम्भव सही सही अनुमान लगाना व परिश्रम का मूल्य निकाल कर A2+FL में शामिल करना चाहिए और यह किया जा सकता है।

2. एक अन्य सिफारिश के अनुसार किसान की स्वयं की जमीन की काल्पनिक रेंटल आय का आंकलन करना और उसे A2+FL में जोड़ना।

यह कठिन कार्य है। इसमें खेत से खेत, गांव से गांव, तालुका से तालुका व भूमि लोकेशन, साइल गुणवत्ता के अनुसार भारी अंतर होता है। इसकी कैसे गणना हो और कैसे कृषि लागत में जोड़े यह कठिन कार्य है।

शायद कॉम्परेन्सिव स्टडी की मेथोडोलॉजी में कुछ परिवर्तन कर इसका अनुमान लगाया जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम तो राष्ट्रीय, राज्य मार्गों, मेजर डिस्ट्रिक्ट रोडस के साथ कि व नगरीय निकायों के पेरफेरी से एक निश्चित दूरी तक कि भूमियों को सर्वे हेतु प्लॉट्स से अलग रखा जाएं। इस प्रकार ज्ञात सूचनाओं का, केंद्र व ग्ेंण्इ के आवश्यक करेक्शन फैक्टर्स लगा कर, विभिन्न श्रेणियों की भूमियों की रेंट के लिए वेटेज निर्धारित कर एवरेज निकलने का प्रयास हो सकता है। लेखक की जानकारी के अनुसार अभी इसका कोई युक्तियुक्त पैमाना तय नहीं है।

3. इसी प्रकार किसी किसान नें दूसरे से जमीन लेकर खेती की है तो उसे खेत मालिक को कितना रेंट दिया है, इसके मूल्यांकन की कोई एक रूपता नहीं हो सकती। सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि इस सब का कोई सरकारी रिकार्ड रखा नही जाता। अधिकांशत: यह लीज, बंटाई आदि मौखिक होती है।

यदि फील्ड सर्वेयर प्रयास करें तो मोटा मोटा अंदाज रेंट या बंटाई हिस्सेदार का हो जाता है। सामान्यत: इस प्रकार की व्यवस्था में खेत मालिक प्रति बीघा नकद रेंट तय करता है या आधी पैदावार का हिस्सा लेता है, खर्चे भी आधे आधे। कहीं खर्चा सारा बंटाईदार का और हिस्सेदारी का अनुपात आपसी सहमति से 50% से नीचे तय हो जाता है। अलग–अलग जगहों के लिए थोड़ा बहुत अंतर मिलेगा।

रेंट भी खेत की लोकेशन व उसकी साइल गुणवत्ता के अनुसार बदलता है। लेकिन प्रश्न यह उतपन्न होता है कि बंटाईदारों का कोई रिकार्ड होता नही।इस लिए इस एक्सरसाइज का कोई अर्थ नहीं हैं। जहां बंटाईदारों का सरकारी अभिलेखों में विवरण रखा जाता हो, वहां यह आंकड़ा तय करना उचित होगा।

4. उपरोक्त पैराओं 2, 3 से यह तो साफ है कि किसान की स्वयं अथवा लीज आदि पर ली गई भूमि का क्या रेंट A2+FL में जोड़ा जाए, यह अत्यंत कठिन कार्य है।

या तो सरकारें पूरे राज्य के लिए एक स्टेंडर्ड निर्धारित करे या CACP यह कार्य करे।

4. इसी प्रकार किसान खुद की मशीनरी जैसे ट्रैक्टर, हार्वेस्टर आदि का काम में लेते है, उस पर व्यय पूंजी पर ब्याज की गणना msp के लिए शामिल हो।हमारे देश में बहुत कम किसान इतने बड़े रकबे में खेती करते हो जहां ट्रैक्टर, हार्वेस्टर आदि केवल खेत मालिक किसान के काम आते हो। इसलिए यदि किसान ट्रैक्टर आदि मशीनरी का उपयोग करता है तो वह साथ में इन मशीनों को किराए पर भी चला कर दूसरे कार्य करता है। इसलिए इस प्रकार डुएल काम में आने वाली मशीनरी की लागत पर ब्याज को C2 कोस्ट में शामिल करना उचित नहीं लगता। अधिकतर किसान इन ट्रैक्टर, ब्लोवर आदि किराए पर लेकर अपना काम करवाते है। इनका खर्च तो कृषि लागत में अब भी शामिल किया जाता है। हां कुछ औजार, उपकरण हर किसान को रखने पड़ते है यथा गेंती, फावड़े, कटर्स–दरांती, छोटी–बड़ी खुरपिया, खाद–पेस्टिसाइड्स का उपयोग करने के छोटे छोटे उपकरण आदि। इन पर हुए व्यय का आंकलन आसानी से किया जा सकता है और इस राशी पर ब्याज C2 में आसानी से शामिल किया जा सकता है।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

राजस्थान में नवसृजित जिलों और संभागों का पुनर्निर्धारण : एक विवेकपूर्ण कदम

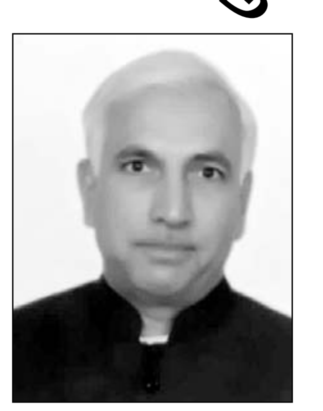

चंद्रमोहन मीणा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व वाली राजस्थान सरकार ने हाल ही में प्रदेश में नवगठित जिलों और संभागों का पुनर्निर्धारण किया है। इस निर्णय के तहत प्रदेश में अब कुल 7 संभाग और 41 जिले होंगे। यह निर्णय प्रशासनिक सुधार, आर्थिक संतुलन और सुशासन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पूर्ववर्ती सरकार द्वारा 2023 में 17 नए जिलों और 3 नए संभागों का गठन किया गया था, जिसकी अधिसूचना 5 अगस्त 2023 को जारी की गई थी। हालांकि, वर्तमान सरकार ने इस निर्णय की समीक्षा करते हुए 9 जिलों और 3 संभागों को समाप्त करने का फैसला लिया है। यह निर्णय सेवानिवृत आईएएस डॉ. ललित के पंवार की विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों और मंत्रिमंडलीय उप–समिति की समीक्षा रिपोर्ट के आधार पर लिया गया है।

राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है, जहां क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से अधिक प्रशासनिक इकाइयों की आवश्यकता महसूस की जाती है। हालांकि, प्रशासनिक इकाइयों का गठन तभी प्रभावी हो सकता है जब यह व्यावहारिक, मापदंड–आधारित और राज्य की आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप हो। पूर्ववर्ती सरकार द्वारा अचानक 17 जिलों और 3 संभागों के गठन का निर्णय आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टि से अव्यावहारिक साबित हुआ। नए जिलों और संभागों के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर और मानव संसाधन की पूर्ति राज्य के लिए बड़ी चुनौती बन गई। पुनर्निर्धारण के प्रमुख कारणों में आर्थिक संतुलन और संसाधनों का कुशल उपयोग, प्रशासनिक प्रभावशीलता, वास्तविक जरूरत पर ध्यान जैसे बिंदुओं को केंद्र में रखा है।

नए जिलों और संभागों के गठन में बड़े पैमाने पर वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। कार्यालय भवन, स्टाफ पदों का सृजन और आवश्यक बुनियादी ढांचे की स्थापना पर अत्यधिक खर्च होता है। 9 जिलों और 3 संभागों को निरस्त करने से यह आर्थिक बोझ कम होगा और इन संसाधनों का उपयोग विकास कार्यों में किया जा सकेगा। छोटे जिलों के निर्माण से कई बार प्रशासनिक बोझ बढ़ता है और निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। नए जिलों के स्थान पर मौजूदा प्रशासनिक इकाइयों को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास बेहतर परिणाम दे सकता है।

जिन जिलों को मर्ज किया गया है, वे मापदंडों पर खरे नहीं उतरते थे। वहां आबादी, क्षेत्रफल और प्रशासनिक जरूरतें इतनी नहीं थीं कि नए जिलों की आवश्यकता होती। नौ जिलों को समाप्त करने के बावजूद आठ जिलों को यथावत रखा गया है। इससे सरकार अब इन जिलों में इंफ्रास्ट्रक्चर, बजट और मानव संसाधन की पूर्ति पर बेहतर ध्यान दे सकेगी। इन जिलों में निवासरत आमजन को प्रशासनिक सेवाओं का वास्तविक लाभ मिलेगा। अनावश्यक खर्च में कमी आने से यह राशि शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश की जा सकेगी। इससे राज्य के समग्र विकास को गति मिलेगी।

प्रशासनिक इकाइयों का पुनर्गठन कानून–व्यवस्था को मजबूत बनाने और सुशासन स्थापित करने में सहायक होगा।

छोटे जिलों के बजाय बड़े और संगठित जिलों में प्रशासन अधिक प्रभावी हो सकता है। भजनलाल सरकार द्वारा 9 जिलों और 3 संभागों को समाप्त करने का निर्णय व्यावहारिक और दूरदर्शी साबित होगा। यह कदम संसाधनों के कुशल उपयोग, बेहतर प्रशासनिक प्रबंधन और राज्य के समग्र विकास के लिए नए रास्ते खोलेगा। नए जिलों के वास्तविक लाभ तभी मिल सकते हैं जब इनकी योजना मापदंडों और आवश्यकता के आधार पर बनाई जाए। राज्य सरकार का यह निर्णय प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक संगठित, प्रभावी और जनहितकारी बनाने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

चंद्रमोहन मीणा
सेवानिवृत आईएएस।

813वां सालाना उर्स : अजमेर जिला व पुलिस प्रशासन ने चादर पेश की

अजमेर, (कासं)। दरगाह के बुलंद दरवाजे पर झंडे की रस्म के साथ सूफी संत ख्वाजा साहब के 813वें सालाना उर्स की अपौचारिक शुरुआत हो गई है। उर्स के मौके पर रविवार को जिला कलेक्टर लोक बंधु और एसपी वंदिता राणा के नेतृव में पुलिस व प्रशासन की ओर से चादर व अकीदत के फूल मजार पर पेश कर देश–प्रदेश में खुशहाली, अमन चैन के साथ शांतिपूर्ण उर्स के लिए दुआ मांगी। अंजुमन के पदाधिकारियों ने कलेक्टर व एसपी सहित अधिकारियों की दस्तारबंदी की।

जिला कलेक्टर लोकबंधु व एसपी वंदिता राणा सहित पुलिस व प्रशासन के आला अधिकारियों ने रविवार को ख्वाजा साहब की मजार पर मखमली चादर व अकीदत के फूल पेश किए। इस अवसर पर कलेक्टर लोकबंधु ने कहा कि दरगाह के उर्स को लेकर सभी तैयारी कर ली गई है। चांद दिखाई देने पर उर्स की विधिवत शुरूआत एक या दो जनवरी से होगी। अनौपचारिक शुरूआत झंडा रस्म की अदायगी के साथ हो गई है। जिला पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा ने कहा कि उर्स के दौरान पुलिस व प्रशासन की ओर से पुख्ता सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। पर्याप्त संख्या में पुलिस जाब्ता तैनात करने के साथ ही आरएएफ टीम सहित स्पेशल टीम भी तैनात की गई है।

गरीब नवाज के उर्स की शुरूआत अनौपचारिक रूप से 28 दिसम्बर को झंडा चढ़ाने के साथ हो गई है। विधिवत शुरूआत चांद दिखाई देने पर एक या दो जनवरी से हो जाएगी।

कलेक्टर लोकबंधु व एसपी वंदिता राणा सहित पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों ने चादर चढ़ाई।

राशिफल

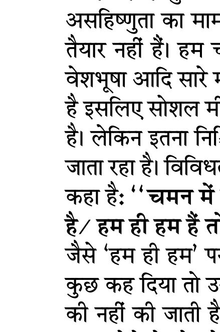

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 30 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, सोमवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र रात्रि 11:57 तक, वृद्धि योग रात्रि 8:32 तक, चतुष्पद करण दिन 3:59 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–धनु, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–मकर, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज देवपितृकार्य अमावस्या और सोमवती अमावस्या, वकुला अमावस्या है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:37 तक, शुभ 9:54 से 11:12 तक, चर 1:47 से 3:04 तक, लाभ–अमृत 3:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:39

मेष
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक मामलों से संबंधित विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

सिंह
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जा सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आज अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। अटके हुए कार्य बन सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।